गद्य -भाग

युगेश्वर झा

जन्म - 09.01.1925

जन्म स्थान - विष्णुपुर अड़ेर, जिला-मधुबनी

निवासी - हरिपुर (मजरही), मधुबनी

वृत्ति - प्रधानाध्यापक उच्च विद्यालय, एकतारा, जिला-मधुबनी।

कृति - मैथिली व्याकरण आओर रचना

निधन - 13.01.2000

विश्वशांति

आजुक युग विज्ञानक युग थीक। प्रकट प्रगति संसारकेँ अपन चमत्कारसँ चकित कए देलक अछि। जाहि वस्तुक कल्पना करब अनुचित बुझना जाइ छल, ताहि वस्तुक सुन्दर समक्ष भए टाढ़ होइछ। शीघ्रगामी यातायातक साधन, विध्वंसात्मक यन्त्र, विस्फोटक पदार्थ आ कलपुर्जाक निर्माण आदि विज्ञानक महत्त्वक प्रतिपादक थीक। शस्त्रास्त्रक उत्पादन उथल-पुथल मचा देने अछि। आसुरी प्रवृत्ति जागल। विश्वयुद्धक आह्वान भेल। एकहि बेरि नहि, दू बेरि। प्रथम महायुद्धक स्वरूप साधारण छल मुदा दोसर महाभीषण भेल। जापानक हिरोशिमा नगर अणुबमक आघातसँ नष्ट भए गेल। विश्वमे हाहाकार पसरल। धन-जन संकटग्रस्त भए गेल। विजयी पक्ष पर्यन्तक बीच फुटक बीजारोपण भेल। आपसमे संघर्ष बढ़ल। साम्राज्य विस्तारक लिप्सा बलवान् राष्ट्रकेँ अन्ध बना देलक। फलतः, एक राष्ट्र दोसर राष्ट्रक विनाशहेतु उद्यत भए गेल। आपसमे प्रतिस्पर्द्धा बढ़ल। आतंकनीति सब अपनाबए लागल। तृतीय महायुद्ध आहवान् होमए लागल। संसार विनाशक पथपर अग्रसर देखि पड़ल।

विश्वक एहि विध्वंसात्मक स्थितिसँ सबहि व्यक्ति त्रस्त भए गेलाह। लोकजीवनक सुख स्वप्न भए गेल। सुधारक आश बड़ कम देखि पड़ल। शान्तिक उपासक जनताक समूह मौन त्याग कएलक। राजनीतिज्ञेटा नहि, अपितु साधारणो व्यक्ति विनाशकारी युद्धकेँ रोकए हेतु उत्सुक भए गेलाह। अतः विश्वमे शान्तिक आवश्यकता सबहि व्यक्तिकेँ सजग कएलक। सब गोटए विश्वशान्तिक उपाय सोचए लगलाह।

किन्तु लीग आफ नेशन्स तथा संयुक्त राष्ट्रसंघक स्थापनासँ विशेष लाभ नहि भेल प्रत्युत दूषित राष्ट्रीय परम्परा आ नैतिक दुराग्रह झगड़ाक जड़ि प्रमाणित भेल। कोनहु राष्ट्रकेँ एतबा साहस नहि जे विश्वशान्तिक प्रश्न उठाबए। परंच भारत सदासँ अध्यातमिकवादी रहल अदि, ओ अहिंसाक पुजारि अछि आ मनिलाक समारोहक उपरान्तसँ पंचशीलक पोषक अछि। ई अपन नीतिक बले सबहक मित्र आ गुरु अछि। महात्मा गाँधीक दर्शन दिशि लोक आकृष्ट

भेल। विश्वभरिमे ओकर आदर होमए लागल। पंडित नेहरू विश्वशान्ति-आन्दोलनक नेतृत्व कए। संत बिनोवाकँ समक्ष प्रश्न उपस्थित भेल। सर्वोदय, भूदान, श्रमदान आदि विषय विश्वशान्तिक प्रकाशस्तम्भ बनल। एँहि तरहेँ विश्वशान्तिक प्रश्न उपस्थित भेल।

यद्यपिं विश्वशान्तिक प्रश्न विश्वभरिकँ शान्ति प्रदान करबाक प्रश्न छल, तथापि एहि क्षेत्रमे बाधा उपस्थित भेल। देशक आर्थिक विषमता देशक वातावरणकँ विषाक्त कएलक। पूँजीपति, श्रमिकवर्ग तथा मध्यवर्ग लोक विश्वशान्तिक पथमे रोड़ा अटकाओल। रंगक भेद मार्मिक रूप धारण कएलक। गोर आ कारी रंगक श्रेणीमे विभाजित जनता कतहु विश्वभरिक शान्तिहेतु प्रयत्नशील रहए? सामाजिक जीव होइतहुँ लोभी व्यक्तिक हृदयमे विश्वशान्तिकँ स्थान कतए? ओतय तँ अविश्वासक छत्रछाया देखि पड़ल। विश्वशान्तिक प्रश्न बड़ जटिल भए गेल।

विज्ञानक चमत्कारसँ संसार विक्षुब्ध भए उठल अछि। यदि विश्वशान्तिकँ विश्व नहि अपनाओत त विश्वयुद्ध अवश्ये होएत। सब देश नष्ट-भ्रष्ट भए जाएत। विश्वयुद्धक त्रास आ संतापसँ तप्त जनता कथमपि विश्वयुद्धक स्वागत नहि करत। ओ शान्तिक हेतु लालयित रहत जाहिसँ सुख प्राप्त कए सकत। एहि स्थितिमे ज्ञान, विज्ञान आ कलाक पूर्ण विकास होएत। समाज, राष्ट्र आ देश संस्कृति आ सभ्यताक विकास करबामे समर्थ होएत। वस्तुतः, एहि प्रश्नकँ हल कएलापर प्रगति पथपर अग्रसर होएबामे भारत सबसँ आगाँ रहत। संगठनसँ समुन्नत एशिया महादेश एक सूत्रमे आबद्ध होएत। इएह कारण अछि जे मानवताक रक्षालेल विश्वशान्तिक उज्ज्वल भविष्यकँ देखि आजुक विश्वमे समुन्नत रूस आ अमेरिका सन देशपर्यन्त भारतक नीतिक भूरि-भूरि प्रशंसा करैछ। किएक तऽ अमेरिका शिकागोमे भारतीय मनीषी युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द उद्‌बोधन विश्वशान्तिक मूल मंत्र देलक। हुनक भाषणक प्रारम्भक दू शब्द-माइ सिस्टर्स एण्ड ब्रदर्स, सम्पूर्ण सभागारकँ पाँच मिनट धरि थपरीक गरगराहटिसँ गूँजायमान कऽ देलक। एतबहि नहि हुनक विश्वबन्धुत्व भावकँ स्वीकार करऽ पड़लैक। स्वामीजीक उक्त विश्वबन्धुत्वक भाव संस्कृतक निम्ने श्लोकसँ उद्धत भेल अछि-

"सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित दु:खभाग भवेत।"

विश्वक शक्तिशाली राष्ट्र जौं उक्त भावकँ स्वीकार कऽ लेअय तखन विश्वशान्तिमे मिसियो भरि बाधा नहि होयत। वस्तुत: एहि नीतिक अबलम्बनसँ छोटसँ पैघ धरि, निर्धनसँ धनी धरि, सबहि व्यक्ति लाभान्वित होयताह। अत: विश्वशान्तिक लेल प्रयत्नशील रहब मानमात्रक कर्त्तव्य थीक।

शब्दार्थ

चकित- आश्चर्य

शीघ्रगामी- जल्दी चलयबला

यन्त्र- मशीन

उद्धत- तैयार

आसुरी- राक्षसी

उत्सुक- इच्छुक

अटकाओल- रोकल

प्रश्न ओ अभ्यास

वस्तुन्ष्ठि प्रश्न

1. निम्नलिखितमे सँ सही विकल्प चुनि कऽ लिखू

(i) हिरोशिमा अवस्थित अछि

(क) जापान मे (ख) अमेरिका मे (ग) रूस मे (घ) चीन मे

(ii) भारत पुजारी अछि

(क) हिंसाक (ख) अहिंसाक (ग) युद्धक (घ) एहिमे सँ ककरो नहि

(iv) देशक आर्थिक विषमता देशक वातावरणकेँ कयलक

(क) विषाक्त (ख) उल्लास (ग) दयावान (घ) निर्धन

(v) शिकागो शहर अछि

(क) अमेरिका मे (ख) रूस मे (ग) जर्मनी मे (घ) भारत मे

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू-

(i) आजुक युगक.............युग थीक।

(ii) साम्राज्य-विस्तारक लिप्सा बलवान राष्ट्रकेँ...................बना देलक।

(iii) विश्वक एहि विध्वंसात्मक स्थितिसँ सवहि व्यक्ति................भय गेलाह।

(iv) सब गोटए विश्वशान्तिक उपाय ....लगलाह।

(v) महात्मा गाँधीक दर्शन दिशि लीक ....भेल।

3. नीचाँ देल गेल शब्दमे सँ शुद्ध (✔) सहीक चेन्ह आ गलत शब्दमे गलतक (X) चेन्ह लगाउ।

प्रयत्नशिल, अध्यात्मवादी, विक्षुब्ध, संस्कृति, उज्जवल, प्रशंसा, लिप्सा, राष्ट्र।

4. लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) अणु-बमक आघातसँ जापानक हिरोशिमा नगर की भए गेल?

(ii) विनाशकारी युद्धकेँ रोकए हेतु के सभ उत्सुक भेलाह?

(iii) लीग ऑफ नेशन्स तथा संयुक्त राष्ट्रसंघक स्थापनासँ की विशेष लाभ भेल?

(iv) विश्वशान्तिक-आन्दोलनक नेतृत्व के कयलनि?

(v) विश्वशान्तिक प्रकाशस्तम्भ लेखक ककरा मानलनि अछि तकर नाम लिखू।

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

(i) विश्वशान्ति किएक आवश्यक अछि?

(ii) भारतीय मनीषी युगपुरुष स्वामी विवेकानन्द अपन भाषण कतऽ देलनि? हिनक भाषणसँ अमेरिका प्रभावित भेल छल?

(ii) सर्वे भवन्तु सुखिन:.....................................कश्चित दु:खभाग भवेत क अर्थ लिखू।

गतिविधि-

(i) स्वामी विवेकानन्दक संबंधमे जानकारी प्राप्त कऽ लिखू

(ii) विश्वशान्तिक संबंधमे अपन मोनमे आयल विचारकेँ लिखू

निर्देश

शिक्षक लोकनि छात्रकेँ विश्वशान्ति तथा ताहि हेतु होइत प्रयासकेँ बुझाबथि, वार्तालाप द्वारा।

सुरेश्वर झा

जन्म - 1930 ई.

जन्म स्थान - तुमौल, जिला-दरभंगा

वृत्ति - अवकाश प्राप्त प्रोफेसर, राजनीतिशास्त्र विभाग, चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय दरभंगा पूर्व प्रतिनिधि साहित्य अकादेमी (मैथिली) दिल्ली।

कृति - स्वतंत्रता संग्रामे मिथिलाक योगदान, जनक आओर याज्ञवल्क्य।

संघर्ष आ सेहन्ता (संस्मरण साहित्य 2006)

जयप्रकाश नारायण

जाहि प्रकाश पुंजसँ आलोकित छलाह जयप्रकाशजी जीवन धरि,-ओ छल सामाजिक परिवर्तन, स्वतंत्रता आ समानताक लेल क्रांतिक आदर्श। हुनक सम्पूर्ण जीवनकेँ क्रांतिक खोज कहल जा सकैछ। ओ विचार आ दर्शनमे क्रांतिकारी छलाह एवं संगहि एक सक्रिय राजनीतिज्ञ छलाह। हुनक राजनीतिक चिंतन-यात्रा गांधीवादसँ मार्क्सवाद, ओतयसँ जनतांत्रिक समाजवाद आ पुनः घुरिकय गांधीवाद एवं सर्वोदय आ तखन फेर सम्पूर्ण क्रांति (टोटल रिवोल्यूशन)।

जयप्रकाश नारायण गांधीजीक असहयोगक समयसँ सामाजिक ओ राजनीतिक दर्शनक गंभीर अध्येता छलाह, कहियो कोनो पद एवं कुर्सीपर बैसि कऽ राजनीति नहि कयलनि। हुनक राजनीतिक जीवन अनुपम आ अनमोल छलनि, जकर तुलना कोनो दोसर राजनेतासँ सहजेँ नहि कयल जा सकैछ। सत्ताक पदकेँ स्वीकार कयने बिना ओ अपन देश आ आन देशक लाखक लाख युवकक मन-मस्तिष्ककेँ एहि शताब्दीक चारि दशकधरि प्रभावित आ आकर्षित कयने रहलाह।

जे0पी0 जे हुनक लोकप्रिय नाम छलनि, एक तेहेन सुन्दर व्यक्तित्वकेँ कहल जाइत छल, जे विश्वप्रसिद्ध लेखक लूई फिसकरक शब्दमे मात्र भारतेटामे जन्म लैत अछि। हुनक जन्म बिहार प्रदेशक सिताव दिआरा नामक एक गाममे एक निम्न मध्यमवर्गक परिवारमे 11 अक्टूबर 1902 केँ भेल छलनि। हुनक पितामह सिपाहीक नौकरी कयलथिन आ पिता हर्षदयाल बिहार सरकारक नहर विभागमे एक कनीय पदाधिकारी रहथि। जयप्रकाश 1919 ई0 मे पटना कॉलेजिएट स्कूलसँ प्रथम श्रेणीमे मैट्रिक परीक्षा पास कयलनि तथा छात्रवृत्ति भेटलनि। ओकर बाद ओ पटना कॉलेजमे भर्ती भेलाह आ इंटरमे विज्ञान विषय रखलनि। तावत पटना साइंस कॉलेज पटना कॉलेजसँ फराक नहि भेल छलैक। 1920 ई0 मे हुनक विवाह दरभंगाक प्रसिद्ध वकील आ बिहारक विख्यात कांग्रेसी नेता ब्रजकिशोर प्रसादक बेटी प्रभावतीसँ भेलनि। कहल जाइत अछि जे एहि विवाहक घटकैती डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद कयने छलाह।

1921 ई0 मे जखन महात्मागांधी अपन असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ कयलनि, जयप्रकाशजी अपन अध्ययन छोड़ि देलनि। छोड़बाक दिनसँ हुनक इंटर विज्ञानक परीक्षाकेँ मात्र बीस दिन रहिगेल रहनि। मौलाना अबुलकलाम आजादक भाषाणसँ प्रभावित भऽ जयप्रकाशजी अपन किछु प्रतिभाशाली सहपाठी, जेना कृष्ण बल्लभ सहाय, पुष्कर ठाकुर, फुलन प्रसाद वर्मा आ विश्वेश्वर दयालक संग पटना कॉलेज छोड़ने छलाह। असहयोग आन्दोलन बन्द भेलाक बादो ओ कोनो सरकारी अनुदानसँ चलैत महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालयमे भर्ती नहि भेलाह। जयप्रकाशजी बिहार विद्यापीठसँ इंटर विज्ञानक परीक्षा पास कयलनि।

स्वामी सत्यदेव परिब्राजकक पोथी ओ भाषणसँ प्रभावित भऽ जयप्रकाशजी 1922 ई0 मे अध्ययन करबाक हेतु अमेरिका चल गेलाह। नव विवाहिता प्रभावतीजी गांधीजीक संग रहबाक लेल साबरमती आश्रम पठाओल गेलीह।

गांधीजीकेँ ब्रजकिशोर बाबूसँ बहुत स्नेह छलनि। आ तेँ प्रभावतीकेँ अपन बेटी बुझैत छलथिन। अमेरिकामे जयप्रकाशजी केलिफोर्निया, आइओआ, विसकौसिन तथा ओहियो विश्वविद्यालयमे सातवर्ष धरि अध्ययन करैत रहलाह आ 1929 मे समाजशास्त्रमे एम0ए0क परीक्षा पास कय ओही वर्ष भारत घुरि अएलाह।

1929 ई0 क दिसम्बर मासक दोसर सप्ताहमे जयप्रकाशजी प्रभावतीक संग माहात्मागांधीसँ भेंट करबाक लेल वर्धाक यात्रा कयलनि, जतय लाहौरमे होमयवला ऐतिहासिक कांग्रेसक तैयारीक लेल कांग्रेस कार्यसमितिक बैसक चलि रहल छलैक। लाहौर कांग्रेसे रावी नदीक तटपर पं0 जवाहरलाल नेहरूक अध्यक्षतामे आयोजित छल। वर्धा आश्रममे जयप्रकाशकेँ बापू आ बाक जमाय बूझि हुनक सत्कार कयल गेलनि। एहीठाम सर्वप्रथम जयप्रकाश आ नेहरू एक दोसराक समक्ष भेलाह तथा प्रथमे भेंटसँ एक दोसराकेँ पसिन्न करय लगलाह। लाहौर कांग्रेस सम्मेलनक बाद नेहरूजी जयप्रकाशकेँ 'आनन्द भवन' बजा लेलथिन आ ओतय ओ कांग्रेसक श्रमविभागक सचित्र नियुक्त भेलाह। अपन प्रतिभा ओ क्षमताक बलपर जयप्रकाश थोड़बे दिनमे कांग्रेसक प्रधान कार्यालय 'आनन्द भवन' मे सबहक स्नेह पात्र बनि गेलाह। नेहरूजी जयप्रकाशक जेठ भाइ बनि गेलथिन आ ओही तरहेँ कमला आ प्रभावती एक दोसराक स्नेही बनि गेलीह।

जयप्रकाश नारायण 1922-23 क सविनय अवज्ञा आंदोलनमे जमि कऽ भाग लेलनि। कांग्रेसक शीर्ष नेतालोकनिक जहल चल गेलाक बाद जयप्रकाशजी कांग्रेसक कार्यकारी महामंत्री भऽ गेलाह। 1932 ई0 मे जखन ओ पकड़ा गेलाह आ जहल पठाओल गेलाह तँ ओहि अवसर पर बम्बईक 'फ्री प्रेस जनरल' छपलक जे ''कांग्रेस ब्रेन एरेस्टेड''। जहलक एहि अवधिमे नासिकमे जयप्रकाशजी जहलक संगी मीनू मसानी, आच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता, एन.जी.गोरे, एस.एम. जोशी तथा एच. एम. दाँतवालासँ कांग्रेसक भीतर एक समाजवादी मंच स्थापित करबाक संबंधमे विचार-विमर्श कयलनि। जहलसँ छुटलाक बाद जयप्रकाशजीक समक्ष एक स्पष्ट विचार छलनि, उद्देश्य आ एक सपना छलनि। ओहीसँ बनल कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी।

कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टीक स्थापना 17 मई 1934 ई0 केँ भेल। जयप्रकाश नारायण ओकर पहिल महामंत्री भेलाह, जाहि पदपर ओ निरंतर बहुतो दिनधरि रहलाह। एहि तरहेँ ओ मात्र बत्तीस वर्षक आयुमे अखिल भारतीय स्तरक नेता बनि गेलाह। दू वर्षक बाद पं0 नेहरू हुनका आचार्य नरेन्द्र देवक संग कांग्रेस कार्यसमितिमे सदस्य बनौलथिन।

1942 केर 'भारत छोड़ू' अगस्त क्रांतिमे जयप्रकाश नारायण लोकप्रियताक शिखर पर चढ़ि गेलाह आ हुनका अगस्त आंदोलनक अग्रदूत कहल जाय लगलनि। ओहि समयमे ओ हजारीबागक 'केन्द्रीय जहल' मे बन्द छलाह। ई असम्भव छल जे ओ ओहि समयमे जहलमे बन्द रहितथि जखनकि सम्पूर्ण देशमे क्रांति चलि रहल छल। आठ नवम्बर 1942 केँ दीयाबातीक रातिमे जयप्रकाशजी अपन पाँच गोट सहयोगीक संग जहलक छहरदिवालीकेँ फानि कऽ बाहर

आबि गेलाह। रामवृक्ष बेनीपुरी, जे स्वयं एहि घटनाक आयोजनमे प्रमुख छलाह, बादमे अपन विख्यात पोथी 'जयप्रकाश' मे ओकर अत्यंत रोचक वर्णन कयलनि अछि। जयप्रकाशजीक संग जहलसँ फननिहारमे छलाह-योगेन्द्र शुक्ल, सूरजनारायण सिंह, पं0 रामनन्दन मिश्र, गुलाटी सुनार आ शालीग्राम सिंह। जयप्रकशजी बाहर आबि भूमिगत आंदोलनकारीसँ सम्पर्क कयलनि तथा आन्दोलनकारी लोकनिमे नव उत्साह देबाक प्रयास कयलनि। एहि समयक जयप्रकाशजीक सबसँ महत्वपूर्ण अवदान नेपाल तराईमे 'आजाद दस्ता' क स्थापना आ स्वतंत्रता आंदोलनमे लागल सेनानी लोकनिक नामसँ लिखल गेल दू गोट पत्र अछि। पहिल पत्र 1943 क फरवरी मासमे लिखल गेल आ दोसर सितम्बर मासमे। दुनू पत्रमे अगस्त आंदोलनक प्रकृति आ महत्वक विश्लेषण कयल गेल छल, जाहिसँ भूमिगत भय आन्दोलन चलौनिहार लोकनिकेँ बहुत प्रेरणा ओ दिशा-निर्देश भेटलनि।

1943 ई0 क 19 सितम्बरकेँ जयप्रकाशजीकेँ दिल्ली आ रावलपिंडीक बीच ट्रेनमे गिरफ्तार कऽ लेल गेलनि तथा हुनका लाहौर किलाक जहलमे राखल गेलनि। लाहौर किलामे जयप्रकाशजी नानाप्रकारक अमानुषिक यातना सहैत रहलाह। बादमे डॉ0 राममनोहर लोहियाक संग हुनका 1945 ई0 क जनवरीमे आगरा केन्द्रीय जहलमे बदली कऽ देल गेलनि। जतऽसँ दुनू गोटे अप्रैल 1946 ई0 मे मुक्त कऽ देल गेलाह।

स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी कानपुर सम्मेलनमे अपना नामसँ 'कांग्रेस' हटा लेलक आ मार्च 1948 मे महात्मा गांधीक हत्याक बाद सोशलिस्ट पार्टी नासिक सम्मेलनमे कांग्रेससँ अपन सम्बन्ध विच्छेद कऽ लेलक। महात्मा गांधीक हत्याक बाद अन्धकारपूर्ण एवं शोकसन्तप्त वातावरणमे आयोजित उक्त सम्मेलनमे सर्वप्रथम जयप्रकाश नारायण राजनीतिमे साधन एवं साध्यक गांधीवादी प्रश्न उठौलनि। एहीठामसँ हुनकामे मार्क्सवादक द्वन्द्वात्मक भौतिकवादसँ हटि कऽ गांधीवाद दिस आकर्षित होयबाक लक्षण देखल जाइत अछि।

1950 ई0 मे आयोजित सोशलिस्ट पार्टीक मद्रास सम्मेलनमे जयप्रकाश नारायण बहुत दूर धरि गांधीजीक विचारधारासँ अभिभूत बूझि पड़ैत छथि। अपन दलक कार्यकर्त्ताकेँ ओहि अवसर पर सम्बोधित करैत औ बजलाह-

''भारतमे गांधीजी एक एहेन पैघ मूलस्त्रोत छथि जतऽसँ समाजवाद निरन्तर प्रेरणा ग्रहण कऽ सकैत अछि। हमरा विश्वास अछि जे यदि आइ मार्क्स स्वयं जिबैत रहितथि तँ ओहो गांधीजीक दर्शन आ मार्गसँ अपन आँखि बन्द कऽ ओहिसँ फराक नहि होइतथि।''

जयप्रकाशजी आगू बजलाह जे समाजवादी आंदोलनक एकमात्र उद्देश्य पूँजीवादी व्यवस्थाकेँ समाप्त कऽ दलक तानाशाहीक स्थापना नहि, स्वतंत्रता आ समानताक आधारपर व्यक्तिक एक एहेन समाजक स्थापना करब थिक, जकर आधार किछु मानवीय आ सामाजिक मूल्य रहतैक। एहि मूल्यकेँ कोनो स्थितिमे, दलक नामपर अथवा कोनो

सिद्धांतक नाम पर छोड़ल नहि जा सकैछ। समाजवाद मात्र एक विचारधारा नहि थिक, ओ एक नव संस्कृति थिक, नवीन सभ्यता थिक।

1952 ई0 क प्रथम आमचुनावमे सोशलिस्ट पार्टीक अप्रत्याशित विफलताक कारणे जयप्रकाशजीकेँ गांधीवादी विचारधारा अधिक प्रभावित करय लगलनि। 1952 मे पूनाक डॉ0 दिनशाह मेहताक प्राकृतिक चिकित्सालयमे आत्मशुद्धिक लेल 21 दिन उपास कयलनि। उपासक बाद जयप्रकाशजी प्रत्यक्ष रूपसँ गांधीवादक समर्थक भऽ गेलाह।

एही बीचमे प्रख्यात गांधीवादी नेता विनोबा भावे अपन आश्रमक जीवनकेँ छोड़ि गांधीजीक रास्तासँ देशक भूमि समस्याक निदान हेतु भू-दान आन्दोलन प्रारंभ कयलनि। जयप्रकाशजी एहि आन्दोलनसँ बहुत प्रभावित भेलाह। ओहिलेल 1954 ई0 मे बोधगयामे भू-दानक माध्यमसँ सर्वोदयक स्थापनाक लेल सक्रिय राजनीतिसँ संन्यास लय अपन 'जीवन-दान' कऽ देलनि। प्रथम चुनावक बाद सोशलिस्ट पार्टी आ आचार्य कृपलानीक किसान मजदूर प्रजा पार्टीक मिलनसँ एक नव पार्टी प्रजासोशलिस्ट पार्टी बनल। जयप्रकाशजी ओहि समयमे ओहि दलक मात्र साधारण सदस्य रहब स्वीकार कयलनि। गांधीजीक पदचिह्न पर चलैत जयप्रकाशजी गया जिलाक बज्र देहातक वातावरणमे स्थित 'सेखो देओरो' मे अपन एक आश्रमक स्थापना कयलनि। ई स्थान पहाड़ी आ जंगलसँ घेरल छल। 1955 ई0 तक 30 जनवरी केँ जयप्रकाशजी प्रभावतीक संग उपवास कयलनि, चरखा चलौलनि आ प्रार्थना कयलनि।

1957 ई0 क द्वितीय आमचुनावक बाद जयप्रकाशजी प्रजासमाजवादी दलक साधारण सदस्यता छोड़ि देलनि। दल छोड़बाक अवसर पर अपन समाजवादी सहयोगी लोकनिकेँ एक पैघ पत्र लिखलनि जे बादमे 'समाजवादसँ सर्वोदय' नामसँ एक पुस्तकक रूपमे प्रकाशित भेल।

जयप्रकाशनारायणक विचार ओ चिंतनसँ प्रभावित यूरोपक समाजवादी एवं शांतिवादी लोकनि हुनका महादेशक यात्रा करबाक निमंत्रण देलथिन। 1958 क अप्रैल मासमे जयप्रकाशजी यूरोप आ एशियाक चारिमासिक यात्रापर गेलाह। ओहि क्रममे जयप्रकाशजी प्रभावती आ एक सर्वोदयी सहयोगी सिद्धराज ढ़ढ़ढ़ाक संग साइप्रस, इंगलैंड, फ्रांस, जर्मनी, स्वीटजरलैंड, इजराइल, डेनमार्क, इजीप्ट, लेबनान आ पाकिस्तानक यात्रा कयलनि।

1960 सँ ओहि दशकक अन्तधरि आ किछु बादोतक जयप्रकाशजी काश्मीर, नागालैंड, नक्सल आतंकवाद आ डकैतक समस्याक गांधीवादी निदानमे अपन समय लगौलनि। 1961 मे लंदनमे आयोजित अंतर्राष्ट्रीय शांतिवादी लोकनिक नि:शस्त्रीकरण सभामे उपस्थित भेलाह। ओहि वर्षक अंतमे प्रदेशक चेब्रोटमे अखिल भारतीय सर्वोदय सम्मेलनक तेरहम आयोजनक अवसरपर एक 'अन्तर्राष्ट्रीय शांति परिषद्' के स्थापना यूरोप, अफ्रिका आ अमेरिकाक शांतिवादी लोकनिक, जेना माइकेल स्कॉट, लार्ड रसेल, केनेथ कौंडा, जुकिंग आदिक, सहमतिसँ कयल गेलैक। ओकर तीन गोट अध्यक्षमे एक अध्यक्ष जयप्रकाश नारायण चुनल गेलाह।

1962 ई0 मे अफ्रिकाक स्वतंत्रता संग्राममे जयप्रकाशजीक योगदान उल्लेखनीय अछि। ओ 'सर्ब अफ्रिकी स्वतंत्रता आंदोलन' द्वारा आयोजित 'शांति मार्च' मे सम्मिलित होयबाक लेल नैरोबी गेलाह। विश्वशांति संगठनक तीनू अध्यक्ष-माइकेल स्कॉट, ए0जे0 मस्ते तथा जयप्रकाशजीक दरेशलाममे एक बैसार कऽ विश्वशांतिक समस्यापर विचार-विमर्श कयलनि। अफ्रिकाक 'स्वतंत्रता संचालन समिति' जयप्रकाशजीसँ बहुत प्रेरणा ग्रहण कयलक। 'सर्ब अफ्रिकी स्वतंत्रता आंदोलन' द्वारा आयोजित तनजानियाक पश्चिम भागमे एक रैलीमे जयप्रकाशजीक रोडेसियाक स्वतंत्रताक महत्त्व पर जोर देलनि।

जयप्रकाश नारायणक नेतृत्वमे 1964 ई0 क सितम्बरक प्रथम सप्ताहमे एक सद्भावना शिष्टमंडल पाकिस्तानक यात्रा कयलक। 1965 ई0 क अगस्त मासमे जयप्रकाशजीकेँ 'रैमन मेगासेसेएवार्ड' सँ सम्मानित कयल गेलनि। फिलीपीन मे 'टुआर्ड्स ए न्यू सोसाइटी' विषय पर भाषण देबाक लेल आमंत्रित कयल गेलनि।

उत्तर बिहारक यात्राक क्रममे मुजफ्फरपुरमे 1971 क नवम्बर मासमे जयप्रकाशजीकेँ हृदय रोगक आक्रमण भेलनि। 15 अप्रैल 1973 केँ प्रभावतीक मृत्यु भय गेलनि।

एहि शताब्दीक सातम दशकमे जयप्रकाशजी पुन: क्रांति दिस अग्रसर हेबाक लेल अपन मन बना लेलनि। क्रांति-पथ पर अग्रसर सेनानी भूदान ओ शांतिमार्गकेँ छोड़बाक लेल तैयार भऽ गेलाह। 1974 मे बिहार ओ गुजरातक छात्र आंदोलनक अगुआ भेलाह तथा ओकर नाम देलथिन 'सम्पूर्णक्रांति'। 4 नवम्बर, 1974 कऽ एक जुलूस नेतृत्व करैत पटनामे जयप्रकाशजी पर पुलिस प्रहार कयलक। 1975 मे देशमे तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गाँधी आपातकालक घोषणा कयलनि। जयप्रकाशजी गिरफ्तार भऽ गेलाह। 1974 क आंदोलनक क्रममे जयप्रकाशजीकेँ 'लोक नायक' कहल गेलनि।

1979 क 8 अक्टूबरकेँ जयप्रकाशजी एहि संसारसँ विदा भऽ गेलाह। हुनक अन्तिम यात्रामे लाखो लोक सम्मिलित भेल छल। अगस्त क्रांतिक अग्रदूत, एशिया भरिक समाजवादी आन्दोलनक नेतामे अगुआ, चिंतक, दार्शनिक, मानवतावादी आ स्वतंत्रता, समानता एवं जनतंत्रक अनन्य पुजारी लोकनायक जयप्रकाश नारायण अपन जीवनक अंतिम समयमे सम्पूर्ण क्रांतिक बिगुल बजा कऽ महाप्रयाण कयलनि। गांधीयुगक भारतक विश्वप्रसिद्ध राजनीतिक आ नेता आ चिंतकमे जयप्रकाश नारायण अन्तिम छलाह।

□□□

शब्दार्थ

घुरिकय = वांपस होयब

आकर्षित=अपना तरफ

विख्यात=प्रसिद्ध

विच्छेद=तोड़िलेब

अभिभूत=प्रभावित

निरन्तर=लगातार

विफलता=असफलता

अप्रत्याशित=आसाक अनुकूल नहि

निःशस्त्रीकरण=शस्त्रक उपयोगकँ परित्याग करब

शिष्टमंडल=सदस्य लोकनिक समूह

प्रश्न ओ अभ्यास

(i) निम्नलिखित बहु बैकल्पिक उत्तरमे सँ सही उत्तर लिखूः-

1. सम्पूर्ण क्रांतिक अग्रदूत छलाह :

(क) जय प्रकाश (ख) बिनोवा भावे (ग) महात्मा गाँधी (घ) राम मनोहर लोहिया

2. 'लोक नायक' कहल गेल अछि :

(क) महात्मा गांधी (ख) राम मनोहर लोहिया (ग) बिनोवा भावे (घ) जय प्रकाश नारायण

3. जय प्रकाश नारायण कँ 'रैमन मैगसेसे अवार्ड' देल गेलनि :

(क) 1962 ई0 मे (ख) 1964 ई मे (ग) 1965 ई0 मे (घ) 1971 ई0 मे

(ii) लघूत्तरीय प्रश्नक उत्तर दिअ :

(i) काँग्रेस ब्रेन एरेस्टेड किएक कहल गेल?

(ii) जवाहर लाल नेहरूसँ जयप्रकाश नारायणकँ कतऽ भेंट भेलनि?

दीर्घोत्तरीय प्रश्नक उत्तर दिअ :

1. हजारीबाग जेलसँ जयप्रकाश नारायण कहिया आ कोना मुक्त भेलाह।

2. जयप्रकाश नारायणकँ इन्टरक पढ़ाई किएक छोड़य पड़लनि?

3. जयप्रकाश नारायण पहिल बेर महामंत्री कहिया भेलाह?

4. सर्वोदय आन्दोलनसँ अहाँ की बूझैत छी? लिखू।

5. समाजवादी विचार धाराक सम्बन्धमे लिखू।

6. जयप्रकाश नारायणक शिक्षा–दीक्षा कोना भेल? लिखू।

स्तम्भ 'अ' आ स्तम्भ 'ब' क मिलान करू :-

स्तम्भ 'अ'	**स्तम्भ 'ब'**
(प) 1979 आठ अक्टूबर	(क) भारत छोड़ो आन्दोलन
(पप) 1973 ई0	(ख) आपातकालक घोषणा
(पपप) 1942 ई0	(ग) जय प्रकाश जीक मृत्यु
(पअ) 1975 ई0	(घ) प्रभावतीक मृत्यु

(iv) कोष्ठकमे देल गेल शब्दमे सँ उपयुक्त शब्द चुनि रिक्त स्थानक पूर्ति करू।

(क) ओ विचार आ .... क्रान्तिकारी छलाह।

(घर्षणमे/वर्षणमे/कर्षणमे/दर्शनमे)

(ख) हुनका .... आन्दोलनक अग्रदूत कहल जाय लगलनि।

(अप्रैल/मई/अगस्त/नवम्बर)

(ग) .... 8 अक्टूबरकेँ जयप्रकाशजी एहि संसारसँ विदा भय गेलाह।

(1975/1977/1978/1979)

(v) गतिविधि-शिक्षक छात्रकेँ सम्पूर्ण क्रांतिक सन्दर्भमे ज्ञान देथि।

राधाकृष्ण चौधरी

जन्म – 15 फरवरी, 1921 ई.

जन्म स्थान – सहरसा

वृत्ति – प्राध्यापक, इतिहास विभाग, जी.डी. कॉलेज, बेगूसराय, अध्यक्ष, इतिहास विभाग, भागलपुर विश्वविद्यालय एवं प्रधानाचार्य, कहलगाँव कॉलेज, भागलपुर।

कृति – मिथिला विभूति लालदास, महाकवि लालदासक कृतित्वक साहित्यिक मूल्यांकन, ए सर्वे ऑफ मैथिली लिटरेचर, मिथिला इन दी एज ऑफ विद्यापति, हिस्ट्री ऑफ मुस्लिम रूल इन तिरहुत, सम आस्पेक्ट्स ऑफ कौटिल्याज आइडियाज एण्ड इन्स्टीच्युसन्स।

निधन – 15 मार्च 1985 ई.

मिथिला विभूति-लालदास

याज्ञवल्क्य, अयाची, मंडन ओ वाचस्पतिक मिथिलामे कखनो प्रतिभाक शुष्कता नहि एलैक चाहे कतबो रौदी, दाही, अकाल किएक ने आयल होइक । एतबहि नहि एहिठामक सभ्यता संस्कृति ओ सामाजिक संरचना पर मुगल आओर अंग्रेजी शासन व्यवस्था कतबो प्रहार कयलक मुदा सांस्कृतिक संरचना अविच्छिन्न ओ प्रवहमान रहल। यद्यपि मुगल साम्राज्यमे फारसी, अंग्रेजक शासनमे अंग्रेजीक वृद्धि अवश्य भेलैक। परञ्च मैथिलीक प्रचार-प्रसारमे कखनहु कमी नहि अयलैक। तखन एतेक बात अवश्य भेलैक जे मैथिली भाषा साहित्यमे नवजागरण एलैक जकर सूत्रपात महाराज लक्ष्मीवर सिंहक समयमे चन्दा झा मिथिला भाषा रामायण लिखि कयलनि आ ओहि परम्पराकेँ आगू बढ़ेबाक श्रेय कविवर लालदासकेँ भेटलनि। जे महाराज रमेश्वर सिंहक समयमे रमेश्वर चरित रामायण लिखलनि। दुनू राम काव्य प्रबन्ध काव्यक श्रेणीमे अबैछ। परम्पराक लीकसँ हटि मिथिला विभूति लालदास मैथिलीक ताहि तरहक उन्नायक भेलाह जकर सेवा सम्पूर्ण मैथिली समाजक लेल अविस्मरणीय रहत।

लालदासक जन्म 1856 ई. मे मधुबनी जिलाक खड़ौआ गामक एक प्रतिष्ठित सुसम्पन्न कायस्थ परिवारमे भेलनि। हिनक पिता बचकन दास नवजात शिशुक नामकरण कयलनि-चूड़ामणि दास। तत्पश्चात् ई (पंडित) लालदासक नामे प्रख्यात भेलाह।

लालदासक बाल्यकाल कष्टप्रद रहलनि। बेसी काल बीमारे रहैत छलाह। मुदा तइयो 5 वर्षक अवस्थामे मुण्डन संस्कारादिक पश्चात लालदासकेँ अक्षरारम्भ करादेल गेल। हिनक आदि गुरुक नाम छल भैयादास। भैयादास पहिने मिथिलाक्षर एवं हिन्दीक प्रारम्भिक शिक्षा देव शुरू कयलनि। कुशाग्र बुद्धिक कारणेँ लालदास अल्प अवधियेमे प्रारम्भिक शिक्षा सम्पन्न कयलनि। तत्कालीन मिथिलामे फारसी भाषाक बेसी प्रचलन छल तेँ लालदास सेहो फारसी भाषा सीखब प्रारम्भ कयलनि। मौलबी साहब मात्र चारि वर्षमे फारसी भाषामे हिनका दक्ष बना देलखिन।

ओहि समयमे अँग्रेजी पढ़ब कौलिक धर्मक विरुद्ध मानल जाइत छल तेँ हिनका संस्कृतमे शिक्षा देब प्रारम्भ कराओल गेल। संस्कृतमे लाल दासक रुचि बेसी छलनि। संगहि पण्डित बनबाक लालसा सेहो रहनि तेँ किछुए दिनमे अमरकोष, सत्यनारायण व्रत कथा, दुर्गासप्तशती, गीता, रामायण आदि अनेक ग्रन्थक पाठ धारा प्रवाह करऽ लगलाह क्रमशः संस्कृतमे संभाषण एवं श्लोक रचनाक अपूर्व क्षमता आबि गेलनि।

संस्कृत भाषाक प्रति प्रेम, पूजा-पाठक संस्कार एवं पारिवारिक परिवेश हिनका माया-मोहक प्रति सजग करऽ लागल। बहुत मनतासँ प्राप्त पुत्रक ई स्थिति देखि माय हिनका ओहि वातावरणसँ किछु दिन अलग रखबाक प्रयास कयलनि। मुदा ओहू अवसर पर तुलसीकृत रामचरितमानस आ विनय पत्रिकाक पारायण हिनका नहि छुटलनि। हिनक पूर्वज धर्मविद् ओ दानशील छलाह। परिवारक शिवालयमे पूजा-पाठ करथि। पूजा पाठक प्रति रूझान दिनानुदिन बढ़िते गेलनि। तेँ हिनका आध्यात्मिकतासँ सांसारिकतामे आनय वास्ते हिनक विवाह फाल्गुन मासक कृष्ण तृतीयाकेँ मात्र

पन्द्रह वर्षमे भक्षी ग्राम निवासी दीवानजी दासक कन्याक संग करा देल गेल। विवाहोपरान्त अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करए लेल दरभंगा एलाह मुदा अर्थाभावक कारणेँ अंग्रेजी पढ़ि नहि सकलाह। मुदा तइयो रमेश्वर सिंहक दरवारमे हिनका एकटा नौकरी भेटि गेलनि जे हिनक पिताकेँ पसिन्न नहि छलनि। तथापि जीविकोपार्जन लेल लालदास नौकरी करब गछि लेलखिन। ज्ञातव्य जे दरभंगा राज ताहि कालमे कोट ऑफ वार्ड्सक अधीन छल। 1886 ई. मे जखन कोर्ट ऑफ वार्ड्स दरभंगा राज परसँ उठा देल गेल तखन लालदास पुनः बेराजगार भऽ गेलाह मुदा हारि नहि माललनि। धार्मिक प्रवृतिक आचरणमे तल्लीन लालदास देवघर बाबाक शरणमे पाँच मास धरि ओ अभ्यर्चना कयलनि। फलस्वरूप हिनक दीन-दशा सुधरऽ लागल। हिनक सौम्य स्वरूप, दिव्य संस्कार, धर्म परायणता, आ उच्च विचार महाराज रमेश्वर सिंहकेँ हठात आकर्षित कयलकनि आ महाराज अपना संगे राखऽ लगलखिन। जाहि कारणेँ ई राज दरवारक मनीषी लोकनिक बीच स्थान प्राप्त कयलनि। एतवहि नहि धौत परीक्षासँ सेहो हिनका सम्मानित करैत 'पण्डित' उपाधिसँ विभूषित ओ प्रतिष्ठित कयलखिन। ताहि दिनसँ लालदास आब पण्डित लालदास नामे विख्यात भऽ गेला। ऋषि महर्षिक आचार-विचारसँ मण्डित आ कर्मकाण्डहुमे प्रवीण देखि लालदासकेँ महाराज कखनो काल ''कायस्थर्षि' विशेषणसँ सेहो सम्बोधित करैत छलखिन। एहि तरहेँ महाराजक अधीन रहि ई बहुत मान-सम्मान आ पद-प्रतिष्ठा प्राप्त कयलनि। एतेक धरि कि महारानी साहिबाक ड्योढ़ीमे हिनका ड्योढ़ी सुपरिनटेन्डेन्टक पद पर पदस्थापित कयल गेल, आ जीवनक अंतिम क्षण धरि एहि पदकेँ सुशोभित करैत रहलाह। पण्डितजी मिथिलेशक संग काशी प्रेयाग, अयोध्या, वृन्दावन, वैद्यनाथ धाम, कामाख्या आदि अनेकानेक दुर्लभ तीर्थस्थानक परिभ्रमण कए तत् जन्य धर्मक लाभ प्राप्त कयलनि। एहि प्रसंग अपन उद्गार व्यक्त करैत कविवर महेश्वर विनोदमे लिखैत छथि-

मिथिलेशक सेवाक फल घुमलहुँ तीर्थ अनेक।

जेहि प्रसाद निष्कलुषमन, पाओल सुदृढ विवेक।।

ज्ञान गाम्भीर्यक कारणेँ लालदास भाषण कलामे बहुत प्रवीण छलाह। मिथिलेशक सभापतित्वमे मधुबनी, भागलपुर, दरभंगा आदि कतिपय धर्मसभाक अवसर पर ई अपन भाषण कुशलताक परिचय देने छलाह। खास कऽ मैथिलीमे हिनक ओजपूर्ण व्याख्यान अत्यन्त विलक्षण ओ श्रोताकेँ मंत्र-मुग्ध करयवला होइत छल। ई सतत् मननशील रहैत छलाह। आशुकवित्व जागि गेलाक बाद तऽ हिनका दिन-रातिमे कोनो अन्तर नहि बुझना जाइत छल। भोजनो कालमे जँ किछु फुरा जाइत छल तऽ ओ वामा हाथे जमीन पर लिखि दैत छलखिन आ बादमे पुनः ओकरा कागज पर उतारि लैत छलाह। काव्य रचनाक्रममे उवियागेला पर बच्चा सभक बीच आबि जाइत छलाह। हिनक बाल सुलभ विचार बच्चाकेँ बहुत आकर्षित करैत छल। संगहि भावुकता भरल वाणी, विचार गाम्भीर्य, आदर्श पाण्डित्य एवं सज्जनताक प्रतिरूपक कारणेँ समाजक सभ वर्गमे हिनका विशिष्ट सम्मान भेटैत छल। समाजक सभ वर्गक मांगलिक कार्यमे उपस्थित भऽ सभक हृदयकेँ जीत नेने छलाह।

कविवर आधुनिकतासँ बिल्कुल अलग छलाह। मिथिलाक कौलिक परम्परानुसार साँची धोती, मिरजई, पाग, दोपटा मात्र पहिरैत छलाह। ई सादगीक साक्षात् प्रतिरूप छलाह। अपन जीवनक अंतिम क्षण धरि अपन मान-सम्मान आ, पद-प्रतिष्ठाकेँ अक्षुण्ण रखलनि।

कविवर काव्यक रचनाक प्रति सतत मननशील ओ चिन्तनशील रहैत छलाह। जकर परिणाम भेल जे मैथिली साहित्य अनेकानेक तरहेँ पल्लवित ओ पुष्पित होइत रहल। हिनक विशिष्ट कृति रमेश्वर चरित रामायण, त अछिए एकर अतिरिक्त सप्तशती दुर्गा-टीका, चण्डी चरित, स्त्री धर्म, शिक्षा, सत्यनारायण कथा टीका, गणेश खण्ड, महेश्वर विनोद, सावित्री सत्यवान नाटक, जानकी रामायण आदि सभ मिला कऽ लगभग 18 गोट पुस्तक रचना कयने छथि। किछु अप्रकाशित पुस्तक थिक जेना आत्म कथा (हिन्दी), सुदामा चरित्र-चित्रण, तन्त्र-पद्धति आदि लगभग पाँच पुस्तक अप्रकाशित अछि जे प्रकाशनक दीर्घ प्रतीक्षामे निमग्न अछि। हिनक सभसँ अंतिम रचना 'श्रीमद्भागवत गीता' छल जे महाकवि लालदासक जीवनकेँ मोह ममताकेँ चिरैत-फारैत अंतिम सत्यक दिशामे अग्रसर कयलकनि आ चिर निन्द्रामे सदाक लेल विलीन भऽ गेलाह। एहन महापुरुषक प्रमाणसँ सम्पूर्ण मिथिला, मैथिल ओ मैथिली स्वयं मर्माहत भेलीह मुदा अंतिम सत्य पर भला ककरो जोर चलैत छैक, जे हिनका पर चलतनि? मिथिला ओ मैथिलीक एहन अनुरागी महामानव अंतिम साँस, अग्रहण कृष्ण तृतीया रवि (सन् 1328 साल) केँ, 65 वर्षक अवस्थामे लेलनि। मैथिली साहित्याकाशक एक देदीप्यमान नक्षत्रक अवसान समस्त मिथिलावासी ओ मैथिली भाषीकेँ मर्माहत कयलक। हमरा लोकनिक बीचसँ मैथिलीक अन्यतम 'लाल' छिना गेल। मुदा अपन प्रखर आलोकसँ हमरा लोकनिकेँ अखनो अनुप्राणित करैत रहैत छथि आ करैत रहताह, किएक तऽ एहन महापुरुष मरणोपरान्तो जीवित रहैत छथि-

वपुर्यांति श्रियो यान्ति यान्ति सर्वेपि बान्धवाः।
कथासारेहि संसारे कीर्तिरेव स्थिरा भवेत्।।

शब्दार्थ

परम्परा=जे पहिनहिसँ आबि रहल हो से व्यवहार

सूत्र=पात-शुरुआत

सुसम्पन्न=जंकर आर्थिक स्थिति मजबूत होइक

नवजात शिशु=तुरत जन्म नेनिहार बच्चा

तत्पश्चात्=तकरबाद

कुशाग्र=तेज

अल्प अवधि=कम समय

लालसा=इच्छा

आध्यात्मिक=ईश्वरक प्रति विश्वास

गछि लेब=स्वीकार कऽ लेब

तल्लीन=सतत् लागल रहब

अभ्यर्चना=पूजा-पाठ

आकर्षित=अपना तरफ खीचब

विख्यात=ख्याति प्राप्त, सुपरिचित

परिभ्रमण=घूमब

निष्कलुष=पाप विहीन

विवेक=अन्तर्मनक विचार भाव

कतिपय=अनेको

आशुकवि=जिनका कोनो चीज देखिते कविता फुरा जाय

देदीप्यमान=खूब चमकैत

अनुप्राणित=उत्साहित

वपुः=शरीर

श्री=धन

प्रश्न ओ अभ्यास

(i) वस्तुनिष्ठ प्रश्न :-

1. 'लक्ष्मीश्वर सिंह' क समयमे छलाह-

(क) विद्यापति (ख) चन्दा झा (ग) गोविन्द दास (घ) लालदास

2. रमेश्वर सिंहक समयमे छलाह-

(क) लालदास (ख) हर्षनाथ (ग) गोविन्द दास (घ) जयदेव

3. 'रमेश्वर चरित रामायण'क रचयिता छथि-

(क) चन्दा झा (ख) रघुनन्दन दास (ग) लालदास (घ) गोविन्द दास

4. दरभंगाराजसँ कोर्ट ऑफ वार्ड्स कहिया हटाओल गेल-

(क) 1882 ई.मे (ख) 1884 ई.मे (ग) 1886 ई.मे (घ) 1855 ई.मे

5. 'महाकवि लालदासक' स्वर्गवास भेलनि-

(क) 60 वर्षक अवस्थामे (ख) 62 वर्षक अवस्थामे (ग) 64 वर्षक अवस्थामे (घ) 65 वर्षक अवस्थामे

(i) लघूत्तरीय प्रश्न -

1. मिथिला भाषा रामायणक रचना किनका समयमे आ के कयलनि?
2. लालदासक जन्म कहिया आ केहन परिवारमे भेलनि?
3. लालदासक प्रारम्भिक शिक्षक के छलखिन आ कोन तरहक शिक्षा देल गेलनि?
4. हिन्दू भऽ कऽ लोक फारसी किएक पढ़ैत छल?
5. लालदास कोन तरहेँ लोकक हृदय जितैत छलाह?

(iii) दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

1. लालदासक बाल्यकालक वर्णन करू।
2. महाकविक शिक्षा-दीक्षाक सन्दर्भमे अपन विचार व्यक्त करू।
3. लालदासक माय लालदासकेँ दोसरठाम किएक पठा देलखिन?
4. कृष्ण पक्षक तृतीया तिथिसँ लालदासकेँ की सम्बन्ध छनि?

(iv) स्तम्भ 'अ' आओर स्तम्भ 'ब' के सही मिलान करू-

(i) 1886 ई.मे	(क) खड़ौआ
(ii) रमेश्वर चरित रामायण	(ख) कोर्ट ऑफ वार्ड्ससँ मुक्ति
(iii) मधुबनी	(ग) लालदास

निर्देश-शिक्षक महोदयसँ आग्रह जे "कोर्ट ऑफ वार्ड्सक" मतलब छात्र लोकनिकेँ बुझा देथि।

भगवानजी चौधरी

जन्म – 07.07.1946

जन्म स्थान – तरौनी (वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' क गाम), दरभंगा।

वृत्ति – सेवानिवृत अध्यक्ष, मैथिली विभाग, साहेबगंज कालेज, साहेबगंज, झारखण्ड।

कृति – गोविन्द दास (आलोचनाक पोथी) विभिन्न पत्र-पत्रिकामे प्रकाशित अनेक निबन्ध।

□□□

पर्यावरण

सम्प्रति पर्यावरण धरतीक प्राणी सभ लेल प्रमुख प्रश्न बनिकेँ मानवताक मनकेँ मंथित कय रहल अछि। पर्यावरणक समस्या स्थानीय वा एकदेशीय नहि अछि, अपितु ई विश्वव्यापी समस्या बनिकेँ जीव-जगतक अस्तित्व लेल समस्या भऽ गेल अछि। विश्व-जनमानस एहि ज्वलन्त समस्याक विनाशकारी प्रभावसँ चिन्तातुर अछि।

पर्यावरण पृथ्वीसँ आकाश धरि प्रकृतिक सीमामे समाहित अछि। सम्पूर्ण आवेष्टन सएह प्रकृतिक अंग थिक। अतः पर्यावरण एवं प्रकृतिमे अन्योन्याश्रय संबंध छैक। पर्यावरणक अर्थ थिक -परि+आवरण अर्थात् परिक अर्थ अछि चारू कात आ आवरणक अर्थ होइत छैक ढक्कन। एहि प्रकारेँ हमर लगपास आकाशसँ पृथ्वी धरि जे आवरण अछि, सएह सम्पूर्ण आवेष्टन पर्यावरण कहबैत अछि। एहिमे ओजोनमंडल, वायु, मेघ, नदी, झील, झरना, सागर, पर्वतमाला आ वनसमूहक सम्मिलित संज्ञा पर्यावरण अछि।

अनादि कालसँ प्रकृति प्राणी सभहिक पोषण करैत आयल अछि। ओ निरन्तर प्रचण्ड झंझावातक निर्मम प्रहार, निदारुण निदाघक दीर्घ दाह आ अस्थि सभकेँ प्रकम्पित कय देनिहार शिशिरि-शीतक संतापसँ हमरा सभक रक्षा करैत रहल अछि। ओ अपन नयनाभिराम श्यामल हरीतिमाक शीतल छायामे आश्रय दयकेँ हमर मनक ताप आ श्रम-श्रान्त मनक क्लांतिक हरण करैत अछि। अपन सरस अमृत फलसँ हमर क्षुधाकेँ संतृप्त करैत अछि, स्वर्गिक पुष्पक सुगन्धिसँ हमरा स्फूर्ति करैत अछि एवं अपन शीतल सलिलसँ हमर अतृप्त तृषाकेँ संतृप्ति-संतुष्ट करैत अछि।

विश्वमे अपन वर्चस्व लेल सभ राष्ट्रमे शक्ति-संचय आ प्रदर्शनक प्रवृत्ति रहल अछि। एहि प्रवृत्तिक परिणति आणविक अस्त्रक अन्वेषक रूपमे भेल। 1945 सँ अविराम अन्तरिक्षमे आणिवक विस्फोट कयल जाइत रहल अछि। असंख्य कल-कारखाना खुजल। ओकर चिमनी, मोटर, कार, जीप, ट्रक, वायुयान आ रेलक इंजिनसँ अविराम निस्सृत धूल-धूआँसँ वायुमंडल प्रदूषित भय चुकल छै। ओहिमे कार्बनक मात्रा बढ़लैए। प्राणक प्रमुख तत्त्व वायु प्रदूषित भेल अछि।

विज्ञान भीषण औद्योगिक प्रतिद्वंद्विताक बीजारोपण कय देलक अछि। प्रगतिक दिशामे अनवरत उत्तरोत्तर उन्मुख हेबा लेल प्रत्येक राष्ट्रक मनमे अपनाकेँ प्रमुख औद्योगिक राष्ट्रक रूपमे विकसित करबाक लालसा जागृत भय उठल अछि। फलतः कल-कारखानाक संख्या निरन्तर बढ़ैत जाय रहल अछि। ओकर कचड़ा आ विषाक्त रासायनिक जल निरन्तर नदीमे खसि रहल अछि। नगरक गंदा नाली सेहो नदीएमे खसि रहल छै। अपना देशक गंगा-यमुना सदृश पवित्र नदीक जल सेहो आब शत-प्रतिशत प्रदूषित भय चुकल अछि। वैज्ञानिक लोकनि सर्वेक्षणक माध्यमे सिद्ध कय देने छथि जे कानपुर, इलाहाबाद, बनारस, पटना आ भागलपुरमे गंगा सर्वाधिक प्रदूषित भय चुकल अछि। ओहिमे टी. बी., हैजा, चेचक, मलेरिया, टायफाइड आ कालाजारक कीटाणु पोसाय रहल अछि। अतः जल जे जीवन लेल सर्वाधिक उपयोगी तत्त्व थिक, ओहो शुद्ध नहि रहि गेल अछि।

कार, जीप, ट्रक, वायुयान, रॉकेट आ रेलगाड़ीक कानफाड़ स्वर हमरा लोकनिक लगपासक वातावरणमे ध्वनि-प्रदूषणकेँ बढ़ओलक अछि।

ई कोलाहल पूर्ण अवनी मानवताक आवास योग्य नहि रहल। शांतिकामी मनुजक अशांत मन क्षण भरिक लेल सेहो शांतिक शीतल मृदुल आँचरमे विश्राम लेल लालायित अछि। परञ्च शांति मृगतृष्णा सदृश प्रतीत भय रहल अछि।

एहि अविराम कोलाहलक ध्वनि प्रदूषण हमरामे मानसिक असंतुलन, विक्षिप्तता, अनिद्रा, बधिरता, रक्तचाप, पागलपन आ आत्महत्याक प्रवृत्ति बढ़ओलक अछि।

उद्योगक स्थापना आ अविराम बढ़ैत जनसंख्याक जठराग्नि मिझेबाक लेल हम शस्य-श्यामल चिरहरित सघन वनकेर निर्ममतावूर्पक विध्वंस कय कृषि क्षेत्रक विस्तार कएलहुँ अछि। वृक्षक महिमाक वर्णन महाभारतमे सेहो भेटैत अछि। वनपर्वक 138-25 म श्लोकमे कहल गेल अछि-

एको वृक्षोहि यो ग्रामे भवेत वर्ग फलान्वितः

चैत्यां भवति निर्ज्ञातिरर्चनीयः सुपूजितः

अर्थात् फल आ पातसँ परिपूर्ण गाछ जाहि गाममे अछि, से देवालयक भाँति संपूज्य अछि। श्वेताश्वर उपनिषद्-3/1 मे कहल गेल अछि-'वृक्ष इव-स्तब्धो दिवि तिष्यत्येकः' अर्थात् वृक्ष विश्वरूप अछि। तँ अपन वन-देवताक लेल मनुक्खक निमर्म मनमे ममता नहि रहल, तँ वेदने ओकर नियति बनि गेल।

एहि प्रकारेँ वनक विनाशसँ वन्य प्राणी आ चिड़ैक प्रजाति सभ विलुप्त होइत अछि। वसुन्धरा एवं पर्वत सभ नांगट भेल अछि। वायुक आघातसँ वन धरतीक ऊपरी उर्वरा माटिक रक्षण करैत छल। जंगले वेगवती नदीक प्रचण्ड लहरिसँ तटक रक्षा कय हमरा सभकेँ बाढ़िक भीषण विनाश-लीलासँ बचबैत छल। परंच ओकर विनाशसँ उर्वरा माटिक क्षरण भेल अछि। कृषिक उर्वरतामे कमी आयल अछि। मरुस्थलक विस्तार भय रहल अछि। चिरहरित कमनीय

काननकेर हरीतिमासँ आकृष्ट भए मेघखण्ड धरतीकेँ सिक्त करैत छल। मुदा वनक कटावसँ बरखा सेहो प्रभावित भेल अछि। बरखाक अभावसँ दुर्भिक्ष बढ़ि रहल अछि। भूगर्भक जल-भंडार सेहो रिक्त भेल अछि। सतत् प्रवहमान सरिता सुखाय रहल छैक। पहाड़ी प्रदेशमे भूकम्प आ धसनाक प्रवृत्ति बढ़ि रहल अछि।

मैथिलीमे डॉ. इन्द्रकान्त झा 'पर्यावरण' शीर्षक कवितामे लिखने छथि जे गाछ-वृक्ष लगाउ, गाछपर पशु-पक्षी वास करैए, वृक्ष लगायब मानव-उपकारक काज करब थिक।

'बौआ! चलू चलू जंगल लगबै लए
जग केँ मंगलमय आनन्दित करै लए
सभ केँ जंगल बड़ नीक लगैए
भाँति भाँति केर पशु-पक्षी वास करैए
सभ सँ मानव केर उपकार होइए
वृक्ष वृक्ष मे मैत्री भाव जगैए''

संतोषक गप्प थिक जे पर्यावरण संबंधी महाविनाशक भयसँ विश्व पर्यावरणकेँ प्रदूषण मुक्त करबाक दिशामे आइ मानवक मन चिन्तातुर भय उठल अछि। एही चिन्तनक परिणति भेल जे 1992 मे पहिल बेर पर्यावरणकेँ प्रदूषणसँ मुक्त करबाक निमित्त ब्राजीलक रिंयो-डी-जनेरोमे विश्व स्तरपर पृथ्वी सम्मेलनक स्तुत्य प्रयास कएल गेल। एहिमे विश्वक 175 राष्ट्रक सहभागिता भेल। मुदा विकसित राष्ट्रक समूह एत्तहु अपन स्वार्थ -प्रवृत्तिक परिचय देलक एवं पर्यावरणक पदूषणक जिम्मा विकासशील राष्ट्रक माथपर दए देलक। परञ्च भारतक परामर्शपर एकटा पृथ्वी-कोषक स्थापना लेल सहमति भेल।

पर्यावरणक समस्या विश्वव्यापी समस्या अछि। तेँ एकर समाधान सेहो विश्वस्तरेपर कएल जेबाक चाही। विकसित एवं विकासशील सभ राष्ट्रकेँ आणविक विस्फोट, रासायनिक अस्त्र, अन्तरिक्षमे खतरनाक प्रयोग सभपर प्रतिबन्ध लेल सहमति हेबाक चाहि। भारी उद्योगक बदला लघु आ कुटीर उद्योगक जाल बिछाबए पड़त। कल-कारखाना, नाली आ अस्पतालक गन्दा पानी वा वस्तु नदीमे नहि खसए, तकर चेष्टा करक चाही। वनक विनाश रोकए पड़त आ नव वन-क्षेत्र बनाबए पड़त। एहि सन्दर्भमे डॉ. इन्द्रकान्त झाक 'पर्यावरण' कविताक निम्न पाँती बड़ आकर्षक भेल अछि-

'सभ जीव-जन्तुकेँ जंगल जीवन दैए
फल-फूलक घनगर छाया मे

घूमनिहार आनंदित होइत रहैए
भाँति–भाँतिक गाछ–वृक्ष, लता–लत्त
मिलि कँ जंगलक रूप धरैए
समय–समय पर मेघकँ बजबैए
अग–जग मे बरखा बरसाबैए
जंगल थिक सभ जन केर अप्पन
चलू–चलू जंगल बचबै लए
जग कँ पर्यावरण सँ युक्त करै लए''

पहाड़ आ नदीक संग छेड़छाड़ अविलम्ब बन्न हेबाक चाही। दुर्गा सप्तशतीमे सेहो वन आ पर्वतक महिमा गाओल गेल अछि–

''यावद् भूमंडल धत्ते सशैल वन काननम्
तावद् तिष्ठति मेदिन्याम् सन्ततिः पुत्र–पौत्रिकी।।''

अर्थात् जावत् धरि ई धरा गाछ, आ पर्वतसँ युक्त एवं वनसँ समृद्ध रहत तावत् धरि मानवक सन्तति सभहिक पालन–पोषण करैत रहत।

शब्दार्थ

सम्प्रति = आइ कालिह
एकदेशीय = एक देशक लेल
चिन्तातुर = चिन्ता सँ आतुर
निदारूण = परम दारूण, छोर
निदाघ = ग्रीम ऋतु
संतृप्त = तृप्त
अनवरत = लगातार
अवनी = धरती
जठराग्नि = पेटक आगि
स्तुत्य = स्तुति योग्य

प्रश्न ओ अभ्यास

1 **वस्तुनिष्ठ प्रश्न**
निम्नलिखितमे सँ सही विकल्पक चयन करू :–
(i)पर्यावरण समस्या अछि–

(क) विश्वव्यापी (ख) एकदेशीय (ग) व्यक्तिगत (घ) केकरो लेल

(ii)वनक कटावसँ प्रभावीत भेल अछि-

(क) बरखा (ख) पढ़ाई (ग) भोजन (घ) किछु नहि

(iii) नरगक गंदा नाली सेहो खसि रह छै-

(क) खेतमे (ख) नदीमे (ग) जंगलमे (घ) कतौ नहि

2. रिक्त स्थानक पूर्ति करू-

(क) पृथ्वी सँ आकाश धरि प्रकृतिक सीमामे........................अछि।

(ख) पर्यावरण एवं प्रकृतिमे.....................संबंध छैक।

(ग) हमर लगपास आकाशसँ पृथ्वी धरि जे आवरण अछि, सएह सम्पूर्ण आवेष्टन..........कहबै अछि।

(घ) अनादि कालसँ प्रकृति प्राणी सभहिक................पोषण करैत आयल अछि।

(ङ) नगरक गंदा नाली सेहो...................मे खसि रहल छै।

3. नीचाँ देल गेल शुद्ध शब्द मे (✔) सहीक आ अशुद्ध शब्द मे (X) कलतीक चेन्ह लगाउ

(क) विक्षिप्तता (ख) रक्तचाप (ग) परीपूर्ण (घ) भीषन (ङ) परियावरण (च) शांतिक्षामि

4. लघु उत्तरीय प्रश्न

(i) ब्राजीलक रियो-डी-जनेरो मे विश्व स्तरपर पृथ्वी सम्मेलनक स्तुत्य प्रयास कोन ई0 मे कयल गेल।

(ii) प्रथम पृथ्वी सम्मेलनमे विश्वक कएक टा राष्ट्र एहिमे भाग लेलक?

(iii) पृथ्वी सम्मेलनक अवसर पर कोन देशक परामर्श पर पृथ्वी-कोषक स्थापना भेल।

(iv) अनादिकालसँ प्राणी सभहिक पोषण के करैत आयल अछि?

(v) विश्वमे अपन वर्चस्वक लेल सभ राष्ट्र की करैत अछि?

5. दीर्घ उत्तरीय प्रश्न-

(i) पर्यावरण कोन-कोन कारणसँ प्रदुषित भऽ रहल अछि?

(ii) वनक विनाश सँ की प्रभाव पड़ि रहल अछि?

(iii) पर्यावरण समस्या सँ बचबाक लेल की की करबाक चाहि?

6. कोनो व्यक्ति, वस्तु आ स्थानक नाम केँ संज्ञा कहल जाइछ? पाठमे आयल संज्ञा शब्दकेँ चुनि कऽ लिखू

7. गतिविधि-

(i) पर्यावरणसँ अहाँ की बुझैत छी?

(ii) पर्यावरण प्रदूषणसँ बचबाक लेल अहाँकेँ की करबाक चाही ?

8. निर्देश

शिक्षक सँ अपेक्षा जे छात्र लोकनिकेँ पर्यावरणक संबंधमे विस्तार सँ बताबथि।

योगानन्द झा

जन्म – 11 जनवरी, 1955

जन्म स्थान – कबिलपुर, दरभंगा

वृत्ति – बिहार सरकारक सेवामे कार्यरत

कृति – आलेख संचयन, लोक जीवन ओ लोक साहित्य, मैथिली शाक्त साहित्य, सम्पादित मैथिलीक पारम्परिक जातीय व्यवसायक शब्दावली, स्नेहलता, लोक साहित्य ओ शब्द सम्पदा, (मौलिक) बिहार लोक कथा, फकीर मोहन सेनापति, मंगल प्रभात (अनुदित)।

पुरस्कार – 2005 मे साहित्य अकादेमी दिल्ली द्वारा अनुवाद पुरस्कार प्राप्त।

प्रस्तुत कथा बिहार लोक कथा-मूल लेखक पी.सी. राय चौधरीक अनुवाद थिक।

□□□

राजकुमार रोहिताश्व

एकटा राजा छला। हुनक नाम छलनि हरिश्चन्द्र। ओ महान छला। दूर-दूर धरि हुनक शासन परसल छल। शाहाबाद जिला रोहतासगढ़ हुनक राजधानी छलनि। एक दिन ओ जंगलमे शिकार खेलऽ गेला। ओहि जंगलमे विश्वामित्रक आश्रम छलनि। विश्वामित्र पैघ ऋषि छला। ओ समाधि लगओने छला। राजाक शिकारसँ हुनक ध्यानमे बाधा भेलनि। विश्वामित्र अपन तपस्यामे बाधा तथा एकान्त ध्यानक क्षेत्रमे अनधिकार प्रवेशसँ बेस तमसा गेला। ओ बदला लेबाक निश्चय कऽ लेलनि।

राजा बहुत पैघ दानवीर छला। एकटा खास दिन जखन ओ धर्मदान बाँटि रहल छला, तखने तमसायल ऋषि राजा लग प्रकट भेला। राजा ऋषिकेँ देखैत देरी प्रणाम कयलथिन आ पुछलथिन-''हम अपनेक कोन सेवा कऽ सकै छी?'' ऋषि हुनका कहलथिन जे अहाँ सत्त करू जे हम किछु माङ्गब से हमरा दऽ देब। राजा वचन हारि देलथिन। ऋषि हुनकासँ राजपाटक संगहि आनो सभटा सांसारिक सम्पत्ति माङ्गि बैसलथि। अपन सत्तसँ बान्हल हरिश्चन्द्र लगले हुनक माङ्ग स्वीकार कऽ लेलथिन। ओ राजपाट आ सभटा सांसारिक संपत्ति हुनका समर्पित कऽ देलथिन। मुदा दानकेँ पूर्ण करबाक हेतु ऋषि हुनका दक्षिणाक (रीतिपरक अंशदान) हेतु दबाव देबऽ लगलथिन। राजा लग आन कोनो सांसारिक सम्पदा तँ छलनि नहि, तँ माङ्गकेँ पूर करबाक हेतु धर्म पर स्थिर राजा अपन दीनता प्रदर्शित कयलनि आ अपन पत्नी आ पुत्रकेँ एकटा ब्राह्मणक हाथेँ बेचबाक हेतु बाध्य भऽ गेला। मुदा विश्वामित्रसँ स्वच्छन्द होयबाक हेतु दक्षिणाक राशि तखनो कम पड़ि गेलनि। हरिश्चन्द्र अपनाकेँ बनारसमे एकटा निम्न जाति डोमक हाथेँ बेचि देलनि आ विश्वामित्रकेँ पाइ दऽ देलथिन। डोम काशीक मणिकर्णिका श्मशान घाटक अधिकारी छल। ओ हरिश्चन्द्रकेँ शव जरयबाक हेतु अयनिहार प्रत्येक व्यक्तिसँ शुल्क ओसुलबाक आदेश देलकनि।

हरिश्चन्द्र अत्यन्त विश्वसनीयताक संग डोमक आदेशक पालन करऽ लगला आ जे केओ मुर्दा जरयबाक हेतु आबय ओकरा सभसँ शुल्क ओसूलऽ लगला। हुनक बेटा रोहिताश्व सर्पदंशसँ मरि गेल। ओकर माय ओकर लाश घाट पर अनलथिन। रातिक समय छल। अन्हड़-बिहारि बहि रहल छलै। हरिश्चन्द्र पहिने तँ अपन पत्नीकेँ चिन्हवे नहि कयलनि आ ने पत्नीये हुनका चिन्हलथिन। हरिश्चन्द्र अपन शुल्क मङ्गलथिन। मुदा हुनक पत्नी शुल्क चुकयबामे

असमर्थ छलथिन। कारण ई छल जे ओ अभावक चरम सीमा पर जा चुकल छली। मुदा हरिश्चन्द्र शुल्क बिना लाशकेँ जरयबाक स्वीकृति नहि दऽ रहल छलथिन, किएक तँ ई हुनक मालिकक आदेश छलनि। स्त्री प्रार्थना करैत बजली-'हमरा लग अपन देह झँपबाक हेतु फाटल-पुरान नूआटा अछि।' हरिश्चन्द्र जोर दैत कहलथिन-'कमसँ कम ओही फाटल-पुरान नूआक एकटा टुकड़ी तँ दऽ दिअऽ।' चरमोत्कर्षक स्थिति अयला पर विश्वामित्र स्थल पर प्रकट भेला आ अपन संतोष अभिव्यक्त करैत बजला-'हरिश्चन्द्र जे पाप कयने छला तकर पूर्ण प्रायश्चित कऽ चुकल छथि।' रोहिताश्व राम-राम कऽ जीवि उठल आ अपन पिताक राजपाट प्राप्त कऽ लेलक।

कहल जाइछ जे रोहतासगढ़ हुनकालोकनिक राजधानी छल। हरिश्चन्द्र आ हुनक पुत्र रोहिताश्वक ई कथा भिन्न-भिन्न कथामे समाहित अछि मुदा सभक मूल लक्ष्य सामने छै। रोहिताश्वक कथा खरबार, ओड़ांव आ चेरोलोकनिक बीच सर्वाधिक लोकप्रिय अछि। ई सभ कहियो ने कहियो रोहतासगढ़ क्षेत्रमे प्रख्यात रहल अछि। हिनकालोकनिमे प्रत्येक रोहिताश्वकेँ अपन पूर्वज होयबाक दावी करै छथि। इहो सत्य थिक जे बिहारक विभिन्न भागक डोम जातिमे राजा हरिश्चन्द्र ओ रोहिताश्वक कथा अत्यन्त प्रचलित अछि। संभवतः ई कथा किछु एहन डोमलोकनिक प्रतीकात्मक सन्दर्भ अछि जे सभ बिहारमे अपन निजी राज्यक संग छोट-छोट राजा छलाह।

शाहाबाद जिलाक रोहतास अथवा रोहतासगढ़क पहाड़ी किला सूर्यवंशी राजा हरिश्चन्द्रक दन्तकथासँ जुड़ल अछि। ई किला कैमूर पर्वतमालामे बसल अछि। ई एक गोट रमणीय स्थल अछि। सालो भरि हजारो लोक एहिठाम अबैत रहै छथि। लोकवृत्तमे राजा हरिश्चन्द्र ओ हुनक पुत्र रोहिताश्वक कथा अनेक आकार-प्रकार धऽ लेलक अछि। राजकुमार राहिताश्वक लोककथा जिला ओ प्रान्तक घेरा तोड़ि चुकल अछि आ ई सम्पूर्ण हिन्दू भारतमे कोनो ने कोनो रूपमे अत्यन्त प्रसिद्धि अछि।

शब्दार्थ

समाधि - योगमुद्रा।

अनधिकार - बिना अधिकारक।

श्मशान - मुर्दघटी, मुर्दा जरेबाक स्थान।

सर्पदंश - साँपक काटब

प्रश्न ओ अभ्यास

1. राजाक नाम की छल?
2. राजाक राजधानी कतय छल?

3. ऋषिक नाम की छल?
4. दानवीर के छलाह?
5. विश्वामित्र राजा सँ की सभ मांगलनि?
6. राजा हरिश्चन्द्रक पुत्रक नाम की छल?
7. अपन पत्नी आ पुत्रकेँ हरिश्चन्द्र किएक बेचलनि?
8. काशीक मणिकर्णिका श्मशान घाटक अधिकारी के छल?
9. राजा हरिश्चन्द्रक दानशीलताक वर्णन करू।
10. विश्वामित्रकेँ दक्षिणा कोना देल गेलनि?
11. रोहिताश्वक शवकेँ जरेबामे की सभ भेल?
12. राजा हरिश्चन्द्रक ई कथा कतय-कतय समाहित अछि?
13. रोहिताश्वगढ़क विषयमे लिखू?

भाषा अध्ययन

1. एहि पाठमे सँ व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दक सूची बनाउ।
2. एहि पाठमे सँ किछु सर्वनाम शब्द बनाउ।
3. भूतकाल किछु वाक्यक सूची बनाउ।
4. एहि पाठमे सँ जातिवाचक संज्ञा शब्द लिखू।

योग्यता विस्तार

1. अहाँ अपन शिक्षककेँ किछु एहन कथा सुनाउ जे अहाँ अपन दादा-दादी आ नाना-नानीसँ सुनने होइ?
2. अहाँ अपन योग्यताक अनुसार गाम-घरक कोनो दानी लोकक कथा लिख शिक्षककेँ सुनाउ।
3. एहि कथासँ अहाँकेँ कोन शिक्षा भेटल अछि?

महेन्द्र नारायण राम

जन्म: 29.01.1958

जन्म सथान: खुटौना, मधुबनी (बिहार)

वृत्ति- पूर्व अध्यक्ष, मैथिली अकादमी, पटना, सदस्य, मैथिली सलाहकार समिति, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, दीपायतन, पटना, विश्वयुवक केन्द्र, नई दिल्ली, प्रियाल, कपार्ट, ऐक्शन-एड, एस.आर.सी., ऑक्सफेम इण्डिया ट्रस्ट, निपसीड आदि।

सम्प्रति : शिक्षा उपाधीक्षक, दरभंगा।

कृति : गहबर (कथा संग्रह), जागि गेल छी (कविता संग्रह), मैथिली लोकगाथा : कारिख पजियार, मैथिली लोकवृत्त : बिन्दु ओ विस्तार (शोध समीक्षा), कारिख लोकगाथा, सलहेस लोकगाथा, दीनाभद्री लोकगाथा, भाओ-भगैत-गहबर गीत (मूल संग्रह) तथा पंचलोकदेवता रमण जी : ग्रामसभा से विधान सभा तक (हिन्दी)।

सम्मान : विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा साहित्यकार संसद, समस्तीपुर, राष्ट्रभाषा परिषद् पटना, सर्वमंगला विद्यापीठ, सिमरियाघाट, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, लोक साहित्य मंच, पटना, मिथिलायतन, रायपुर, (छत्तीसगढ़) भारतीय साहित्य जागरण परिषद्, बाबूबरही तथा राष्ट्रीय साहित्य परिषद्, दलसिंहसराय द्वारा।